International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 7.150, Volume 06, No. 02(II), April - June, 2024, pp. 101-106

सूफीवाद और सूफीवाद के विभिन्न संप्रदायः एक परिचयात्मक अध्ययन

अमर सिंह*
डॉ. मीना अम्बेश**

सार

सूफी वे कहलाएं, जो सफेद ऊन का कपड़ा पहनते थे।'' उनके सीधे, साधारण कपड़े पहनने का मतलब यह था कि ये वे लोग थे, जो सीधे और सरल वस्त्र धारण करते थे, सीधी सरल जिंदगी जीते थे और लोगों को सीधे सरल तरीके से, प्रेम पूर्वक रहने को प्रेरित करते थे। सूफी संतों ने इस्लाम के एकेश्वरवाद का पालन किया। ये आमतौर पर वे थे जिन्होंने मुस्लिम धार्मिक विद्वानों द्वारा स्थापित इस्लामिक परम्परा की जटिलताओं और आचार संहिता का विरोध किया। सूफी संतों ने धर्म के बाहरी आडम्बर को त्याग कर भक्ति और सभी मनुष्यों के प्रति दया तथा प्रेम भाव पर बल दिया। संत कवियों की तरह राजस्थान में सूफी संत भी अपनी बात कविता के जरिये कहते थे। वे अपना संदेश लोगों तक कहानी सुना कर भी पहुँचाते थे। सूफियों के बारे में यह भी प्रचलित है कि इनमें कई दिव्य शक्तियाँ है। इन शक्तियों को लेकर अनेक तरह के किस्से कहानियाँ भी सूफी संतो के बारे में फैली है। सूफियों में किसी उस्ताद, औलिया या पीर की देख रेख में अलग–अलग तरह से दिव्य शक्ति के नजदीक आने के तरीके विकसित हुए। कभी नाचकर, कभी गाकर, तो कभी केवल मनन–चिंतन करके, उस्ताद पीढ़ी दर पीढ़ी शागिर्दो को सीख देते थे। इस तरह कई सिलसिलों की शुरूआत हुई। हर सिलसिले का काम करने का, विचारों का, अपना ही तरीका होता था। धीरे–धीरे हिन्दुस्तान में मध्य एशिया से भी सूफी आने लगे। ग्यारहवीं सदी तक हिन्दुस्तान दुनिया में सूफी सिलसिलों के लिए जाना जाने लगा।

शब्दकोशः *सूफीवाद, साधना, एकेश्वरवाद, संप्रदाय, सार्वभौमिक, आध्यात्मिकता, सिद्धांत।*

प्रस्तावना

सूफीवाद

''तसव्वुफ'' के तत्व दुनिया के हर धर्म में पाए जाते हैं। यह अलग बात है कि उनका नाम देश के समय के अनुसार बदलता रहा। पश्चिम हो या पूर्व, यह हर जगह दिखाई देता है। मूल मान्यता हर देश के सूफियों में एक ही है। प्रत्येक सूफी का लक्ष्य परम सत्ता की खोज, उसका अनुभव, उसकी दृष्टि, उसकी निकटता और उससे आगे रहा है। तसव्वुफ को प्यार पर आधारित कहा जाता है।

डॉ. जमीला आली जाफरी ने लिखा है – ''प्रेम सूफी साधना की प्रमुख धुरी है।''

इसका स्वरूप इतना सार्वभौम है कि कोई भी देश, कोई जाति, कोई समुदाय इससे वंचित नहीं है। प्रेम और मानवता की सेवा इन सूफियों का लक्ष्य रहा है। यही कारण है कि सूफीवाद जनता के बीच फलता–फूलता और फलता–फूलता रहा।

---

* शोधार्थी, (इतिहास विभाग), राज ऋषि भर्तृहरि मत्स्य विश्वविद्यालय, अलवर, राजस्थान।
** शोध निर्देशिका, एसोसिएट प्रोफेसर (इतिहास विभाग), बाबू शोभाराम कला महाविद्यालय, अलवर, राजस्थान।

प्रमुख सूफी सन्तों के नाम : 1. ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती, 2. शेख हमीदउद्दीन नागौरी, 3. शेख फरीदुद्दीन महमूद, 4. ख्वाजा मखदूम हुसैन नागौरी, 5. हजरत निजामुद्दीन औलिया। सूफी मत में कई सम्प्रदाय हैं, पर भारत में सिर्फ चार सम्प्रदायों का महत्व रहा है। यथा–कादरी, चिश्ती, सुहरावर्दी तथा नक्शबन्दी।

सूफी शब्द की उत्पत्ति

इस्लाम के रहस्यवाद या सूफियों के दर्शन को तसव्वुफ के नाम से जाना जाता है। सूफी शब्द की उत्पत्ति के संबंध में अनेक विद्वानों ने भिन्न–भिन्न मत व्यक्त किए हैं। अबू नस्र अल–सरज ने ''किताब–अल–लूमा'' में सूफी शब्द के बारे में लिखा है। ''सूफी'' शब्द की उत्पत्ति अरबी शब्द ''सूफ'' से हुई है जिसका अर्थ ''ऊन'' होता है। अरब देश में सात्विक विचारधारा वाले संत ऊनी वस्त्र धारण करते थे, इसलिए उन्हें ''सूफी'' कहा जाता था।

मिस्टर ब्राउन के अनुसार, यह निश्चित है कि सूफी शब्द ''सूफ (ऊन)'' से लिया गया है। फारसी में फकीरों को 'पश्मीनापोश' (ऊन पहनने वाला) कहा जाता है। इससे भी इस मत की पुष्टि होती है।

कुछ लोग इसे ग्रीक वाक्यांश 'सोफिया' (ज्ञान) का एक रूप मानते हैं। अधिकांश शिष्य 'सफा' वाक्यांश से इसके आरंभिक स्थान पर विचार करते हैं। उनका कहना है कि जो व्यक्ति पवित्र था उसे सूफी कहा जाता था। अलबरूनी का कहना है कि वह सोचता है कि इसका मतलब उस युवा से है जो सफी (शुद्ध) है। उनके अनुसार यह सफी ही सूफी हो गया है–अर्थात् विचारकों का समूह। कुछ कहते हैं कि मदीना में मुहम्मद साहब द्वारा बनाई गई मस्जिद के बाहर 'सफ' यानी चबूतरे पर आकर शरण लेने वाले और पवित्र जीवन जीने वाले और खुदा की इबादत में तल्लीन रहने वाले बेघर लोगों को सूफी कहा जाता था। एक समूह ने इसकी उत्पत्ति 'सफ' (पंक्ति) से मानी है। उनके अनुसार, ये लोग सूफी कहलाते हैं जिन्हें फैसले के दिन अन्य लोगों से अलग पंक्ति में खड़ा किया जाएगा क्योंकि वे पवित्र और ईश्वर के भक्त हैं।

इस प्रकार यह मत दृढ़ हो गया कि जो सन्यासी ऊनी वस्त्र पहनकर अपने धर्म का प्रचार करने के लिए इधर–उधर घूमते थे, वे 'सूफी' कहलाते थे। दिसंबर 1945 में त्रिवेंद्रम में मीर अलीउद्दीन ने सूफी शब्द की उत्पत्ति पर विचार करते हुए अखिल भारतीय दर्शन कांग्रेस के अध्यक्ष पद से इस्लामी दर्शनशास्त्र के एक भाषण में सूफी शब्द से सूफी शब्द की उत्पत्ति पर जोर दिया। इस प्रकार एक सूफी एक धार्मिक साधक है जो ऊनी कपड़े पहनता है और प्रियतम के रूप में ईश्वर की पूजा करता है।

सूफीवाद की परिभाषा

''तसव्वुफ'' या ''सूफीवाद'' की कोई निश्चित परिभाषा देना मुश्किल है क्योंकि यह अल्लाह और बन्दे के बीच का ऐसा अनुभव है कि अनुभव करने वाला इसे पूरी तरह व्यक्त करने में सफल नहीं होता चाहे वह इसे व्यक्त करने की कोशिश करे।

प्रो. के.ए. निजामी, ''सूफीवाद उच्च स्तरीय स्वतंत्र विचार का एक रूप है।''

हुजवीरी के अनुसार, ''सूफी संतों के लिए सूफीवाद का सिद्धांत सूर्य के समान स्पष्ट है। इसलिए इस संबंध में कोई स्पष्टीकरण नहीं देना चाहता।

मारूफ–अल–कारखी के अनुसार, ''सूफीवाद का विश्वास ईश्वर के बारे में वास्तविकता को समझना और मानवीय चीजों को त्यागना है।''

अबुल हुसैन अन्नुरी की नजर में, ''दुनिया से नफरत और खुदा से मोहब्बत सूफीवाद है।'' अल–कुशरी ने, ''बाहरी और आंतरिक जीवन की पवित्रता को सूफीवाद माना है।''

अगर हम यहां ध्यान से देखें तो पता चलेगा कि यहां दी गई सूफीवाद की सभी परिभाषाओं में बाहरी और आंतरिक शुद्धता पर विशेष जोर दिया गया है। अपनी सभी इच्छाओं और कामनाओं को समर्पित कर देना और खुद को ईश्वर के हवाले कर देना सूफियों का परम कर्तव्य माना गया है।

सूफीवाद के विभिन्न संप्रदाय

सूफीवाद के विभिन्न संप्रदायों की संख्या 175 तक मानी जाती है, लेकिन इनमें 11 संप्रदाय महत्वपूर्ण हैं। ''आईन अकबरी'' में उन 14 पंथों का उल्लेख है, जो उस समय प्रचलित थे। सूफीवाद के प्रमुख सम्प्रदाय निम्नलिखित हैं –

- **चिस्तिया संप्रदाय**

इस संप्रदाय की स्थापना खुरासान निवासी ख्वाजा अबू अब्दुल्ला ने की थी, लेकिन भारत में इसका प्रचार सर्वप्रथम ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती ने किया। ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती का जन्म 1143ई. में सिस्तान (अफगानिस्तान) में हुआ था। वह गयासुद्दीन के पुत्र और ख्वाजा उस्मान हारून के शिष्य थे। युवावस्था से ही आपने सत्य की खोज में अनेक स्थानों का भ्रमण किया। माता–पिता के साथ सिस्तान से खुरासान आया और वहां से निशापुर चला गया। वहाँ आपने ख्वाजा हारून से गुरु–दीक्षा ली और उन्होंने ही आपको भारत जाने का आदेश दिया। वह 1190 ईस्वी में भारत आया और सबसे पहले मुस्लिम शिक्षा के केंद्र लाहौर में रहा। लाहौर में, उन्होंने कुछ समय प्रसिद्ध सूफी अली हुजखी के मकबरे में ध्यान लगाने में बिताया, और यहाँ उन्होंने ''काशफुक महजूल'' की रचना की, जो इस्लाम के धार्मिक सिद्धांतों पर आधारित है। लाहौर से दिल्ली और उसके बाद आप अजमेर आ गए। ख्वाजा साहब ने अजमेर में अपार ख्याति प्राप्त की। कुछ हिन्दुओं ने अजमेर से ख्वाजा साहब के निष्कासन की माँग की। इसलिए आपने पानी पीना बंद कर दिया। लेकिन कुछ लोग कहते हैं कि जातिगत भेदभाव के चलते कई बार आपको पानी तक पीने से मना किया गया। हालाँकि, ख्वाजा साहब ने हिंदुओं के प्रति एक उदार रणनीति अपनाई और उनके प्रभाव के कारण कई ब्राह्मण ''हुसैनी ब्राह्मण'' के रूप में प्रसिद्ध हुए। आपकी मृत्यु 1234ई. में हुई।

ख्वाजा साहब ने सार्वभौमिक एकेश्वरवाद का प्रचार किया। उनका सिद्धांत था कि मानवता की सेवा ईश्वर की भक्ति का सर्वोच्च रूप है। चिश्तिया संप्रदाय के अनुयायी ''चिल्ला'' का अभ्यास करते हैं, जिसके अनुसार वे एक मस्जिद या एक कमरे में 40 दिन एकांत में बिताते थे। ''जिक्र'' के समय वे ''कलमा'' के शब्दों पर अधिक जोर देते हैं और अपने शरीर और ऊपरी हिस्से को हिलाते हैं। संगीत इस्लाम धर्म में अवैध है, लेकिन चिश्ती संप्रदाय के संतों ने संगीत के आध्यात्मिक मूल्य पर जोर दिया और उच्च श्रेणी के संगीतकारों को संरक्षण दिया। ये ज्यादातर रंगीन कपड़े पहनते हैं। ख्वाजा साहब की मृत्यु के बाद उनके असंख्य शिष्यों ने प्रचार कार्य जारी रखा। अजमेर में ख्वाजा की दरगाह (मकबरा) बनी हुई है, जहां हर साल 6 दिनों तक उर्स (मेला) लगता है। अजमेर के अलावा दिल्ली, अंबाला, पाक पाटन और डेरागाजी खां इनके प्रमुख तीर्थ स्थान हैं।

शेख कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी ख्वाजा साहब के प्रमुख शिष्यों में अग्रणी थे। उनका जन्म 1186 ई. में फरगना में हुआ था। वह सुल्तान इल्तुतमिश के शासनकाल में भारत आया था। सुल्तान इल्तुतमिश धार्मिक प्रवृत्ति का व्यक्ति था और शेख का सम्मान करता था। उसने शेख से अपने साथ रहने का अनुरोध किया, लेकिन स्वतंत्र स्वभाव का होने के कारण, शेख ने सुल्तान के प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया और शहर के बाहर एक मठ में रहने लगा। इल्तुतमिश उसे ''शेख–उल–इस्लाम'' के उच्च पद पर नियुक्त करना चाहता था, लेकिन शेख ने इस पद को स्वीकार करने से इनकार कर दिया। शेख ने दिल्ली छोड़ने का फैसला किया। लेकिन सुल्तान के अनुरोध पर उसने अपना विचार त्याग दिया। शेख रहस्यवादी गीतों के प्रेमी थे। एक गायक की सभा में वे भक्ति के जुनून में मूर्छित हो गए। चार दिन तक बेहोश रहने के बाद (15 नवंबर, 1235) उनकी मृत्यु हो गई। शेख काकी के शिष्य फरीदुद्दीन मसूद गजशंकरय जो बाबा फरीद के नाम से प्रसिद्ध थे, शेख काकी के उत्तराधिकारी बने। आपने हांसी और अजोधन में सूफीवाद का प्रचार किया। एकांतप्रिय होने के कारण उन्होंने अपना निवास स्थान राजधानी से दूर बना लिया था। गरीब होते हुए भी वह सुल्तान और अमीरों से संबंध रखने के खिलाफ था। उन्होंने सदैव हृदय की एकाग्रता पर बल दिया। सुल्तान बलवान बाबा फरीद का बहुत आदर करता था। 1265 ईस्वी में उनकी मृत्यु हो गई और उनकी इच्छा के अनुसार उन्हें पाक पट्टन में दफनाया गया।

निजामुद्दीन औलिया (1236–1325 ई.) बाबा फरीद के प्रमुख शिष्य थे। उसने दिल्ली के सात सुल्तानों का शासन देखा। औलिया की संगीत में रुचि के कारण सुल्तान गयासुद्दीन ने उन पर मुकदमा चलाया, लेकिन उनके

सनकी व्यक्तित्व के कारण उन्हें बरी कर दिया गया। औलिया ने सुल्तान के बेटे उलुग खान को अपना दरबारी बनायाय जिससे सुल्तान उससे और अधिक नाराज हो गया। ऐसा कहा जाता है कि जब सुल्तान बंगाल की विजय से लौट रहा था, तो उसने दिल्ली पहुंचने से पहले औलिया को दिल्ली छोड़ने का आदेश दिया। औलिया ने जवाब भेजा कि ''हुनुज दिल्ली दूर'' (दिल्ली अभी बहुत दूर है)। संयोग से सुल्तान के दिल्ली पहुँचने से पहले एक दुर्घटना हो गई। माना जाता है कि ऐसा औलिया के श्राप के कारण हुआ था। ''(प्रभु के प्रिय)। औलिया के संत–समान गुणों और मानवता के प्रति प्रेम और सेवा के कारण चिश्ती संप्रदाय भारत में लोकप्रिय हुआ। 325 ईस्वी में औलिया की मृत्यु के बाद यह संप्रदाय दो भागों में विभाजित हो गया। किया गया – पहला निजामिया संप्रदाय और दूसरा शबिरिया सम्प्रदाय। शेख नसीरुद्दीन महमूद चिराग ने औलिया के प्रमुख शिष्यों में अखिल भारतीय ख्याति प्राप्त की। सुल्तानों से उसका मनमुटाव था, परन्तु उसने सुल्तान के सामने कभी सिर नहीं झुकाया। 1336 ई. में उसकी मृत्यु हो गई।

चिश्ती संप्रदाय के अंतिम महान सूफी संतों में शेख सलीम चिश्ती का नाम विशेष उल्लेख के योग्य है। अकबर के शासन काल में वह फतेहपुर सीकरी में रहने लगा। कहा जाता है कि शहजादा सलीम का जन्म शेख के आशीर्वाद से हुआ था। अकबर उनका बहुत आदर करता था। शेख सलीम ने चिश्ती परंपराओं को बनाए रखा। मृत्यु के बाद उन्हें फतेहपुर सीकरी की जामा मस्जिद के प्रांगण में दफनाया गया। अकबर के काल में चिश्ती संप्रदाय बहुत लोकप्रिय हुआ।

उपर्युक्त संतों के प्रयासों से भारत में चिश्ती संप्रदाय का विकास एवं प्रसार हुआ। इसकी सफलता के कारणों में सुल्तानों द्वारा प्रोत्साहन, प्रेम की शिक्षा और संतों का उज्ज्वल चरित्र था। अन्य सम्प्रदायों की अपेक्षा भारत में इसका प्रचार अधिक हुआ।

- **सुहरवर्दिया संप्रदाय**

चिश्तिया सम्प्रदाय के बाद सुहरवर्दीया विभाग को अतिरिक्त महत्व दिया जाता है। इस पंथ के मूल प्रवर्तक जियाउद्दीन अबुलजीव थे और शेख शहाबुद्दीन सुहरावर्दी इस पंथ के प्रसिद्ध संत थे। यह संप्रदाय मुख्य रूप से उत्तर–पश्चिमी भारत में स्थापित था। भारत में सर्वप्रथम इस सम्प्रदाय के प्रचार का कार्य शेख बहाउद्दीन जकारिया सुहरावर्दी ने किया। शेख जकारिया 13वीं शताब्दी के एक बहुत ही प्रभावशाली सूफी संत थे। वह चिश्तियों की तरह दरिद्रता, उपवास, संयम और शरीर को कष्ट देने में विश्वास नहीं करते थे, बल्कि एक आरामदायक जीवन व्यतीत करते थे। उन्होंने धन भी एकत्र किया और वर्तमान राजनीतिक मामलों में रुचि ली। 1262 ई. में शेख जकारिया की मृत्यु के बाद सुहरावर्दी सूफियों में वंशानुगत उत्तराधिकार का नियम लागू हुआ। इस समुदाय के संतों ने सिंध, पंजाब, गुजरात, बिहार और बंगाल में अपनी आस्था का प्रचार किया। कुछ संत जैसे सैयद जलालुद्दीन सुरखपोश (1291 ई.), सैयद जलाल और बुरहार अल–दीन कुतुबय आलम (1453 ई.) आदि इस संप्रदाय में अधिक प्रसिद्ध हुए। इसके अलावा शेख मूसा और शाहदौला नदी का भी महत्वपूर्ण स्थान है। शेख मूसा महिलाओं के कपड़े पहनते थे और नृत्य–संगीत में उनकी विशेष रुचि थी। शाहदौला मूसा के शिष्य थे। वे गुजरात के रहने वाले और शाही वंश के थे, लेकिन सूफी बनने के कारण उन्होंने सब कुछ त्याग दिया था।

- **कादिरिया संप्रदाय**

यह पंथ बारहवीं शताब्दी में बगदाद के शेख अब्दुल कादिर जिलानी की सहायता से स्थापित हुआ करता था। भारत में सबसे पहले इस शाखा का प्रचार 15वीं शताब्दी में शाह निया–मतुल्लाह और मखदूम जिलानी ने किया था। मखदूम ने उच को अपना निवास स्थान बनाया। मकदूम के बाद इस पंथ का नेतृत्व अब्दुल कादिर के प्रपौत्र शेख हमीदगंज बख्श ने संभाला। इसके बाद उनके दोनों बेटों ने प्रचार का काम किया। शेख मूसा ने अकबर के समय में राजपद ग्रहण किया। उसी वर्ष (1635 ई.) में शेख की मृत्यु हो गई। अतः उसका उत्तराधिकारी मुल्ला शाह बदख ी था। दाराशिकोह ने उनका शिश्यत्व ग्रहण किया और तसव्वुफ से संबंधित कई ग्रंथ लिखे और हिंदू–मुस्लिम एकता स्थापित करने का प्रयास किया।

- **नक्सबंदिया संप्रदाय**

इस संप्रदाय की स्थापना 14वीं सदी में ख्वाजा बहाउद्दीन नक्लबंद ने की थी, हालांकि भारत में इसका प्रचार ख्वाजा बाकिबिल्लाह (1563–1603) के जरिए हुआ। वह 1600 ई. में भारत आया और 1603 ई. में उसकी मृत्यु हो गई। वह सनातन इस्लाम को मानते थे और कभी नए परिवर्तनों के विरोधी थे। ख्वाजा के प्रमुख शिष्य कभी अहमद फारूक सरहिंदी थे जो अकबर और जहांगीर के अग्रणी हुआ करते थे। उनका व्यक्तित्व अद्‌भुत था और उनका परिवार आध्यात्मिकता के लिए जाना जाता था। उन्होंने ''प्रितवाद'' के सिद्धांत को प्रतिपादित किया और उल्लेख किया कि मनुष्य और ईश्वर के बीच संबंध गुरु और सेवक का है, अब प्रेमी और प्रिय नहीं, जैसा कि विभिन्न सूफी सोचते हैं। वास्तव में, उनका इरादा एक बार सनातन इस्लाम के साथ सूफी रहस्यवाद के मानकों को मिलाना था। उन्होंने अकबर द्वारा प्रतिपादित शिया सम्प्रदाय और ''दीन–ए–इलाही'' की कड़ी आलोचना की।

इस पंथ के दूसरे प्रमुख संत शाह वलीउल्लाह औरंगजेब के समकालीन थे। उन्होंने एकेश्वरवाद (वहदत–उल–वजूद) और प्रत्यक्षवाद (वहदत उस–शुहुद) के बीच सामंजस्य स्थापित करने का सफल प्रयास किया। वे एक प्रतिष्ठित विद्वान, असाधारण प्रतिभा के धनी और लेखक थे। ख्वाजा मीरदार इस संप्रदाय के अंतिम प्रसिद्ध संत थे। उनका झुकाव मुस्लिम रूढ़िवाद की ओर था, जिसके अनुसार उन्होंने ''इल्मे इलाही–मुहम्मद'' (मुहम्मद की शिक्षाओं में ईश्वरीय ज्ञान) नामक एक नए सिद्धांत को प्रतिपादित किया, जिसके अनुसार कुरान की शिक्षाओं का पालन करना मनुष्य का कर्तव्य है, भगवान का पालन करने के लिए भक्ति में सेवक बनो।

- **अन्य संप्रदाय**

सूफीवाद के उपर्युक्त चार प्रमुख संप्रदायों के अलावा, कई अन्य छोटे संप्रदाय भी थे। इनमें से कुछ संप्रदाय ऐसे थे जिनका कार्यक्षेत्र भारत नहीं था और कुछ संप्रदाय भारत के एक क्षेत्र विशेष में प्रचार का कार्य करते रहे। जैसे उत्तरी अफ्रीका, तुर्की, रुमानिया, इराक, अल्जीरिया आदि देशों में शादविलीय संप्रदाय, निमातुल्लादिया संप्रदाय और तेजनिया संप्रदाय के अनुयायी पाए जाते हैं। इनके अलावा भारत में शतरिया संप्रदाय का प्रचार हुआ और इसका कार्यक्षेत्र गुजरात था, जहां इस संप्रदाय के लोगों ने एक मदरसा भी स्थापित किया था। कलंदरिया समुदाय के लोग अपने पास एक खपरा (प्याला) रखते थे और अपने बाल मुंडवाते थे। इस संप्रदाय के संत सैयद खिजरूमी कलंदर की मुलाकात निश्तिया संप्रदाय के शेख बख्तियार काकी से हुई थी और दोनों ने एक दूसरे के संप्रदाय को स्वीकार कर लिया था। परिणामस्वरूप ''चिश्तिया कलंदरिया'' उप–समुदाय का जन्म हुआ। शेख बदीउद्दीन शाहमदार मदारिया संप्रदाय के संस्थापक थे। वह अध्ययन और शांति के लिए मक्का और मदीना गए और वहां से भारत आ गए। अजमेर में ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती की आत्मा के निर्देशानुसार माकनपुर (कानपुर के निकट) को उनका निवास एवं प्रचार केन्द्र बनाया गया।

शोध सार

सूफी विचारधारा ने भारतीय समाज में महत्त्वपूर्ण योगदान किया। सूफी हिन्दू धर्म के भीतर अन्धविश्वासों को तोड़ने में लगे हुए थे, सूफियों ने इस्लाम के भीतर एक नए उदारवादी दृष्टिकोण का प्रचार किया। सूफी विचारों के बीच अन्तर्व्यवहार अधिक उदार आंदोलनों की नींव रखी। सूफी संतों ने सार्वभौमिक प्रेम पर आधरित गैर सांप्रदायिक धर्म का प्रचार किया। सूफी वहादत–उल–वजूद (प्राणियों की एकता) की अवधारणा में विश्वास करते थे जिसको इब्न–ए–अरबी (1165–1240) द्वारा बढ़ावा दिया गया। उन्होंने कहा कि ''सभी प्राणियों का अस्तित्व है। विभिन्न धर्म एक समान हैं।'' सूफियों और भारतीय योगियों के बीच विचारों का उपयुक्त आदान–प्रदान होता था। यहाँ तक कि हठयोग ग्रंथ अमृत कुण्ड का अरबी एवं फारसी में अनुवाद किया गया। सूफियों का उल्लेखनीय योगदान समाज के गरीब एवं दलित वर्गों की सेवा में रहा। यद्यपि सुल्तान व उलेमा अधिकतर लोगों की दैनिक समस्याओं से अलग रहे। सूफी सन्तों ने जनता से निकट संपर्क बनाए रखा। निजामुद्दीन औलिया जरूरतमंद लोगों के बीच उपहार के वितरण के लिए प्रसिद्ध थे। चाहे वे लोग किसी भी धर्म या जाति के हों।

यह कहा जाता है कि वे तब तक विश्राम नहीं करते थे जब तक वह खानख्वाह पर आने वाले प्रत्येक आगंतुक की प्रार्थना नहीं सुन लेते थे। सूफियों के अनुसार ईश्वर की भक्ति करने का सर्वोच्च ढंग मानवता की सेवा थी। वे हिन्दू एवं मुसलमानों के साथ समान व्यवहार करते थे।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. आचार्य रामचन्दं शुक्ल : लोक जागरण और हिन्दी साहित्य, सम्पादक –रामविलाश शर्मा।
2. श्री दादू महाविद्यालय रजत जयन्ती ग्रन्थ (सन 2009) – श्री दादू महाविद्यालय, मोतीडूंगरी, जयपुर।
3. चतुर्वेदी, पं. परशुराम (संवत 2058) – हिन्दी साहित्य का वृहद इतिहास भाग–4, ना.प्र.सभा, वाराणसी।
4. डॉ. राजेश श्री वास्तव 'शम्बर' : हिन्दी साहित्य का प्राचीन इतिहास।
5. फारूकी, आजाद, आई. एच.(1984) : सूफीवाद एवं भक्ति , अभिनव पब्लिकेशन।
6. भारद्वाज डॉ. हेतु, पंचशील समीक्षा त्रैमासिक पत्रिका (जनवरी मार्च 2010) पंचशील प्रकाशन जयपुर लेख– ''अवतारवाद का समाज शास्त्र और लोकधर्म''
7. वडथ्वाल, डॉ. पीताम्बर दत्त (संवत 2000) – हिन्दी काव्य में निर्गुण सम्प्रदाय, अवध पब्लिसिंग हाउस, लखनऊ।
8. वासुदेव पी.जी., संग्रथन मासिक पत्रिका मार्च (2014) हिन्दी विद्यापीठ (केरल) तिरूवन्तपुरम, लेख – ''अब और नहीं : दलित उत्पीड़न के खिलाफ सबल प्रतिरोध''।
9. संपादक, वासुदेव पी.जी., संग्रथन मासिक पत्रिका (जुलाई 2013) हिन्दी विद्यापीठ केरल, लेख– ''रामचरित मानस में सामाजिक जीवन''।
10. सं. वेदव्यास मधुमती पत्रिका (अप्रेल 2013) राजस्थान साहित्य अकादमी उदयपुर लेख – ''भारत का सपना''।
11. सिंह, डॉ. वासूदेव (सन 2001) – हिन्दी संत काव्य समाजशास्त्रीय अध्ययन, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
12. सीताराम लालस : राजस्थानी शब्दकोष ('अ' से 'घ' तक) प्रथम खण्ड, राजस्थानी साहित्यागार, जोधपुर।
13. डॉ. सुशील त्रिवेदी (संयोजक), बाबू लाल शुक्लः हिन्दी साहित्य का इतिहास, भाषा संस्कृति और चिन्तन।
14. संवत 1879 ई. के हस्तलिखित पत्र पांचला से प्राप्त राजस्थान का आध्यात्मिक परिचय, पृष्ठ 31
15. गुप्ता के. एस. एण्ड ओझा, जे.के., राजस्थान का इतिहास एक सर्वेक्षण आरम्भिक काल से 1956 ईस्वश तक, जयपुर 2018।

❖◆❖